स्रोत विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स

RNI REG. NO: MPHIN/2007/20200

पूर्वाग्रह और विज्ञान

कई बार ऐसा होता है कि आप कोई सिद्धांत विकसित करते हैं और वह सिद्धांत आपके सिर पर ऐसे सवार हो जाता है कि आप सोच भी नहीं सकते कि वह गलत हो सकता है। ऐसा हो जाने पर यदि प्रमाण उस सिद्धांत के विरुद्ध जाएं, तो वह व्यक्ति अपने सिद्धांत पर संदेह करने की बजाय प्रमाणों को झुठलाने की कोशिश करता है। कभी-कभी तो प्रमाण गढ़ने की कोशिशें भी देखी गई हैं।

इस संदर्भ में एक प्रकरण सर सिरिल बर्ट (1883-1971) का है। 1971 में 88 वर्ष की उम्र में देहावसान के समय तक वे कई सम्मानों से नवाज़े जा चुके थे। सर बर्ट एक शिक्षा मनोविज्ञानी थे और उनके अनुसंधान ने बुद्धिमत्ता सम्बंधी बहस को काफी प्रभावित किया था। खासतौर से इस मामले में उनका खासा असर था कि बुद्धि प्राकृतिक रूप से निर्धारित होती है या परवरिश से। उनका पहला महत्त्वपूर्ण शोध पत्र 1909 में प्रकाशित हुआ। इसमें गरीब बच्चों और समृद्ध बच्चों के आईक्यू परीक्षण के आधार पर निष्कर्ष निकाला गया था कि बुद्धि एक कुदरती चीज़ है, परवरिश से इसका कुछ लेना-देना नहीं है। यह बर्ट के आगे के काम का मूलमंत्र बन गया।

बर्ट ने जन्म के बाद बिछड़ गए जुड़वां बच्चों पर जो अध्ययन किए उनसे पता चलता था कि बुद्धि (आई.क्यू.) में आनुवंशिकता ही महत्त्वपूर्ण कारक है, परवरिश की भूमिका नगण्य होती है।

मृत्यु के बाद बर्ट पर आरोप लगे कि उन्होंने जाली आंकड़े प्रस्तुत किए थे। उनके आंकड़ों में कई विसंगतियां और अस्पष्टताएं देखी गई थीं। इसके अलावा उनकी दो सहकर्मियों, जेन कॉन्चे और मार्गरेट हॉवर्ड का कोई अता-पता नहीं था।

यह आरोप लगा कि वास्तव में बर्ट ने इन दो महिलाओं का 'सृजन' किया था और सारे तथ्यों में अपने सिद्धांत के अनुसार फेरबदल की थी। यानी उनके पूर्वाग्रह हावी हो चुके थे। वैसे इस संदर्भ में उल्टा आरोप यह भी लगा था कि उनके परिणामों को संदेह के घेरे में लाने वाले लोग भी पूर्वाग्रहों से मुक्त नहीं थे।

बहरहाल, बर्ट के अध्ययनों व आंकड़ों के हालिया अन्वेषण से पता चलता है कि कभी-कभी कोई जालसाज़ व धोखेबाज़ भी प्रभावशाली व प्रतिष्ठित हो जाता है और सर की उपाधि तक हासिल कर लेता है।

प्रकाशक, मुद्रक सी.एन. सुब्रह्मण्यम की ओर से निदेशक एकलव्य फाउण्डेशन द्वारा एकलव्य, ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462016 (म.प्र.) से प्रकाशित तथा आदर्श प्राइवेट लिमिटेड, इंदिरा प्रेस कॉम्पलेक्स, एम.पी. नगर, ज़ोन-1 भोपाल (म.प्र.) 462 011 से मुद्रित। सम्पादक: डॉ. सुशील जोशी